ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार (संगीत के ताल के आधार पर)

ग़ज़ल एक अतिप्रचलित काव्य प्रकार है। ग़ज़ल के अतिप्रचलित होने की एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। ग़ज़ल के छंद मात्रिक छंद होने के कारन ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि को और ग़ज़ल के छंदों को संगीत के ताल के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को संगीत के ताल के आधार पर निश्चित किया जा सकता है और यही इस लेख का मुख्य विषय रहेगा।

ग़ैर-फ़िल्मी और फ़िल्मी ग़ज़ल के अलावा फ़िल्मी गानों में भी ग़ज़ल के छंदों का अच्छा प्रयोग हुआ है। तक़रीबन् २००० से अधिक फ़िल्मी गानों का अभ्यास करने पर ५०० से अधिक गाने (फ़िल्मी गीत और ग़ज़ल दोनों को मिला कर) ऐसे मिले कि जिसमें ग़ज़ल के छंदों का प्रयोग हुआ हो और पूरा गाना एक ही छंद में हो। जिस गाने में एक से अधिक छंदों का प्रयोग हुआ हो उसे गिनती में लिया नहीं है। इसके अलावा ५०० से अधिक ग़ैर-फ़िल्मी रचनाओं का भी ग़ज़ल के छंदों के अनुसार वर्गीकरण किया है। इतने गीत-ग़ज़ल के अभ्यास करने पर ४० से अधिक छंद प्राप्त हुए। इन छंदों में सभी प्रचलित छंदों का समावेश हो जाता है। इन छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को संगीत के ताल के आधार पर निश्चित किया जा सकता है। ग़ज़ल के छंदों के निरूपण के लिए संधि के मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

ग़ज़ल के छंदशास्त्र के अनुसार पंक्ति (मिसरा) के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को वज़न में अलग से न गिनते हुए उसे उससे पहलेवाले गुरुअक्षर में ही समाविष्ट कर दिया जाता है और उस लघुअक्षर को उसी गुरुअक्षर के साथ संयुक्त तरीक़े से ही उच्चारा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि ग़ज़ल के छंदों का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होता है। ग़ज़ल के छंदों में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता। ग़ज़ल के प्रचलित होने में एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है।

पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि की सूचि प्रस्तुत है कि जिसमें हरेक संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही है और किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक

स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	लगागा़	पंचकल	१+२+२=५
०२	गा़लगा	पंचकल	२+१+२=५
०३	लगालगा़ या लगा़लगा	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	ल़लगागा	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	गाल़लगा	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	लगा़गागा	सप्तकल	१+२+२+२=७
०७	गालगा़गा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालगा़	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालगा़	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लगा़लललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागागा़गा या गागागागा़	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालगा़गा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागागा़	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललगा़गा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललगा़	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललगा़	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गाल़गालगा़	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त सूचि में संधि क्रमांक १ से १७ में से संधि क्रमांक १ से १२ को मुख्य संधि समझना चाहिए कि जिसके आवर्तित स्वरूप की रचना पाई जाती है तथा संधि क्रमांक १३ से १७ को गौण संधि समझना चाहिए कि जिसका प्रयोग ज़ियादातर गागागा़गा या गागागागा़ संधि के विकल्प के रूप में ही होता है।

अब मैं अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की सूचि प्रस्तुत कर रहा हूं कि जिसमें किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	गागा़ल	पंचकल	२+२+१=५
०२	गालगा़ल या गा़लगाल	षट्कल	२+१+२+१=६
०३	गागालल़	षट्कल	२+२+१+१=६
०४	गालगा़लल	सप्तकल	२+१+२+१+१=७
०५	गा़गागाल	सप्तकल	२+२+२+१=७
०६	गा़लललगाल	सप्तकल	२+१+१+२+१=७
०७	गागागा़लल	अष्टकल	२+२+२+१+१=८
०८	गाललगा़लल	अष्टकल	२+१+१+२+१+१=८
०९	गागाल़गाल	अष्टकल	२+२+१+२+१=८

उपरोक्त दोनों सूचि में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है और किसी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है। अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की उपरोक्त सूचि में से कुछ संधि का प्रयोग अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी कुछ संधि के विकल्प के रूप में (छंद की अंतिम संधि के अलावा) किया जा सकता है जिसका वर्णन मैं बाद में करूंगा।

ग़ज़ल के छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किया जा सकता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग वर्जित है तथा जहां दो लघुअक्षरों का प्रयोग हो वहां दो स्पष्ट लघुअक्षरों का ही प्रयोग करना होगा, दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग या एक गुरुअक्षर का प्रयोग वर्जित है। सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर (मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा) दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग करने की छूट है मगर छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होना चाहिए। एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों के प्रयोग के लिए यह नियम बाधक नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

किसी भी मात्रामेल रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं। मात्रामेल रचना में प्रयुक्त संधि के आधार से निश्चित कालांतर पर पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) की पुनरावृत्ति होती रहती है। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) के स्थान के लिए ताल-स्थान या ताल शब्द का भी प्रयोग होता है, मगर संगीत की परिभाषा में ताल

शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होने के कारन हम पद्यभार शब्द का ही प्रयोग करेंगे और वही ज़ियादा उचित है।

जिस तरह ग़ज़ल-रचना में प्रवाहिता के लिए छंद ज़रूरी है उसी तरह संगीत-रचना में प्रवाहिता के लिए ताल ज़रूरी है और ग़ज़ल गेय काव्य का ही प्रकार है, इस वजह से ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के बीच में सीधा संबंध स्थापित होता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का पद्यभार निश्चित करने के लिए हम संगीत के ताल का ही प्रयोग करेंगे। ग़ज़ल के छंद में प्रयुक्त संधि पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की हैं कि जिसका पद्यभार निश्चित करने के लिए हम अनुक्रम से ताल झपताल (१० मात्रा), दादरा (६ मात्रा), रूपक (७ मात्रा) या दीपचन्दी (१४ मात्रा) और कहरवा (८ मात्रा) का प्रयोग करेंगे। सब से पहले मैं इन चारों ताल का विवरण प्रस्तुत करता हूं।

झपताल :

मात्रा : १०

खंड : ४ (२+३+२+३)

ताली की मात्रा : १, ३ और ८

खाली की मात्रा : ६

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×		२			०		३		

ताल दादरा :

मात्रा : ६

खंड : २ (३+३)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ४

धा	धी	ना	धा	ती	ना
१	२	३	४	५	६
×			०		

ताल रूपक :

मात्रा : ७

खंड : ३ (३+२+२)

ताली की मात्रा : ४ और ६

खाली की मात्रा : १

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७
×			१		२	

ताल दीपचन्दी :

मात्रा : १४

खंड : ४ (३+४+३+४)

ताली की मात्रा : १, ४ और ११

खाली की मात्रा : ८

धा	धीं	-	धा	गे	तीं	-	ता	तीं	-	धा	गे	धीं	-
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
×			२				०			३			

ताल कहरवा :

मात्रा : ८

खंड : २ (४+४)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ५

धा	गे	न	ती	न	क	धी	न
१	२	३	४	५	६	७	८
×				०			

ताल के संदर्भ में कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत है।

सम :

किसी भी ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं कि जहां पर पूरी लय का वज़न आता है। सम किसी भी ताल की पहली और सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा है। सम दर्शाने के लिए × चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

ताली :

ताल में आघात के स्थान को ताली कहते हैं। सम के अलावा ताली के स्थान को दर्शाने के लिए अंकों का प्रयोग होता है।

खाली :

ताल की वह विषम मात्रा कि जिससे ताल का स्वरूप निर्धारित होता है उसे खाली कहते हैं। खाली को दर्शाने के लिए ० चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

सम, ताली और खाली की उपरोक्त व्याख्या एक संगीतकार ही अच्छी तरह से समझ सकता है। अगर आसान शब्दों में समझा जाए तो किसी रचना के गायन के दरमियान श्रोतागण ताली बजा कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर होगा। यानि कि श्रोतागण की तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के सम, ताली और खाली पर होगा। जैसे कि झपताल में स्वरबद्ध हुई रचना के गायन में श्रोतागण ताली दे कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान झपताल की १, ३, ६ और ८ वीं मात्रा पर (अनुक्रम से झपताल के सम, ताली, खाली और ताली पर) होगा।

हमने ऊपर देखा कि ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा ताल की अन्य मात्रा से ज़ियादा वज़नदार होती है और पहले खंड की पहली मात्रा (सम) अन्य खंड की पहली मात्रा के मुक़ाबले ज़ियादा वज़नदार होती है। संगीत के ताल के आधार से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित करते समय ताल में लघु-गुरु अक्षरों को इस तरह गूंथना होगा कि लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनते हुए ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर जहां तक मुमकिन हो गुरुअक्षर ही आए। इसके बाद सम (ताल की सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा) के आधार से मूल संधि निश्चित करेंगे कि जिसके पहले ही अक्षर पर मुख्य पद्यभार होगा। अलग-अलग प्रकार की संधि के अनुरूप ताल का प्रयोग करके ताल के पहले खंड की पहली मात्रा (सम) के आधार पर मूल संधि का मुख्य पद्यभार निश्चित किया जा सकता है तथा ताल के दूसरे खंड की पहली मात्रा के आधार पर मूल संधि का गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। अलग-अलग प्रकार की मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर अन्य सभी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित किया जा सकता है। इस तरह से पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की मूल संधि उनके अनुरूप ताल के आधार से निश्चित करने के बाद उसी मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त होनेवाली सभी प्रकार की संधि का मुख्य और गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। मूल संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

: पंचकल संधि :

पंचकल संधि में एक लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ५ होती है। १० मात्रा के झपताल में पंचकल संधि दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
गा	-	ग़ा	-	ल	गा	-	ग़ा	-	ल
×		२			०		३		

ऊपर झपताल की १ से ५ मात्रा और ६ से १० मात्रा दोनों में से मूल पंचकल संधि गागग़ाल प्राप्त होती है। इसके आधार पर लगागग़ा और ग़ालगा संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: षट्कल संधि :

षट्कल संधि में दो लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ६ होती है। ग़ज़ल के छंदों में षट्कल संधि दो प्रकार से प्रयुक्त होती है।

(१)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि
(२)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	ग़ा	-	ल
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी मूल षट्कल संधि गागल़गाल या ग़ालगागल प्राप्त होती है क्योंकि षट्कल संधि गालगाल त्रिकल संधि गाल का आवर्तित स्वरूप है। इसके आधार पर लगागलग़ा या लग़ालगा संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	ल़	गा	-
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी मूल षट्कल संधि गालल़गा प्राप्त होती है। इसके आधार पर लल़गागा और गागालल़ संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: सप्तकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि सप्तकल संधि में एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं। सप्तकल संधि की कुल मात्रा ७ होती है। ७ मात्रा के ताल रूपक में सप्तकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७
गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-
×			१		२	

ताल रूपक के आधार से मूल सप्तकल संधि गालग़ागा प्राप्त होती।

एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हो ऐसी सप्तकल संधि १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी में दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-	गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-
×			२				०			३			

ताल दीपचन्दी के आधार से भी मूल सप्तकल संधि गालग़ागा ही प्राप्त होती है।

गालग़ागा संधि के आधार से लग़ागागा, गागालग़ा, ग़ागागाल और गालग़ालल संधि को प्राप्त किया जा सकता है। लग़ागागा, गागालग़ा और ग़ागागाल संधि के आधार पर अनुक्रम से लग़ाललगा, ललगालग़ा और ग़ाललगाल संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: अष्टकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि अष्टकल संधि में चार गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ८ होती है। ८ मात्रा के ताल कहरवा में अष्टकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८
गा	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-
×				०			

अष्टकल संधि में प्रयुक्त चार गुरुअक्षर में से कौन सा गुरुअक्षर ताल कहरवा की पहली मात्रा पर स्थित है ये निश्चित करना मुश्किल है मगर सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों की रचना का पठन या गायन करने पर संधि के पहले या दूसरे गुरुअक्षर पर मुख्य पद्यभार का अनुभव किया जा सकता है। इस हिसाब से मूल अष्टकल संधि गागागा़गा या गागागागा़ को प्राप्त किया जा सकता है। गागागा़गा संधि के आधार पर लगालगा़गा, गाललगा़गा, गागागा़लल, गाललगा़लल और गागाल़गाल संधि को तथा गागागागा़ संधि के आधार पर ललगागागा़, गागाललगा़, ललगाललगा़ और गाल़गालगा़ संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

ग़ज़ल के छंदों की रचना की इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ मूल पंचकल संधि गागा़ल का और मूल षट्कल संधि गालगा़ल या गा़लगाल का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में नहीं होता क्योंकि इनका अंत्याक्षर लघुअक्षर है, जबकि मूल षट्कल संधि गालल़गा, मूल सप्तकल संधि गालगा़गा और मूल अष्टकल संधि गागागा़गा या गागागागा़ का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में होता है क्योंकि इनका अंत्याक्षर गुरुअक्षर है।

इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्यभार के अलावा गौण पद्यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती। मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने से छंद की प्रवाहिता को नुकसान पहुंचता है।

अब मैं संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को दर्शानेवाली तुलनात्मक सूचि प्रस्तुत करता हूं। दोनों सूचि में हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	लगागा़	२	३
०२	पंचकल	ग़ालगा	२	३
०३	षट्कल	लगालगा़ या लग़ालगा	३	३
०४	षट्कल	लल़गागा	३	३
०५	षट्कल	गालल़गा	३	३
०६	सप्तकल	लग़ागागा	३	४
०७	सप्तकल	गालग़ागा	३	४
०८	सप्तकल	गागालग़ा	३	४
०९	सप्तकल	ललगालग़ा	३	४
१०	सप्तकल	लग़ाललगा	३	४
११	अष्टकल	गागाग़ागा या गागागाग़ा	४	४
१२	अष्टकल	लगालग़ागा	४	४
१३	अष्टकल	ललगागाग़ा	४	४
१४	अष्टकल	गाललग़ागा	४	४
१५	अष्टकल	गागाललग़ा	४	४
१६	अष्टकल	ललगाललग़ा	४	४
१७	अष्टकल	गालगालग़ा	४	४

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	गागा़ल	२	३
०२	षट्कल	गालगा़ल या गा़लगाल	३	३
०३	षट्कल	गागालल़	३	३
०४	सप्तकल	गालगा़लल	३	४
०५	सप्तकल	गा़गागाल	३	४
०६	सप्तकल	गा़लललगाल	३	४
०७	अष्टकल	गागागा़लल	४	४
०८	अष्टकल	गाललगा़लल	४	४
०९	अष्टकल	गागाल़गाल	४	४

उपरोक्त दोनों सूचि के अभ्यास से कुछ तारण निकाल सकते हैं जो इस प्रकार है।

(०१)	किसी भी संधि में मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है।
(०२)	जिस संधि में मुख्य या गौण पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित हो उस संधि में मुख्य या गौण पद्यभारवाले लघुअक्षर के बाद गुरुअक्षर का ही प्रयोग हुआ है।
(०३)	मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार दोनों लघुअक्षर पर ही स्थित हो ऐसी एक भी संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त नहीं होती।
(०४)	किसी भी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ नहीं आते।
(०५)	हरेक पंचकल संधि में मुख्य पद्यभार से द्विकल संधि (गा) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) को अलग किया जा सकता है।

(०६)	हरेक षट्कल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल या लगा) को अलग किया जा सकता है।
(०७)	हरेक सप्तकल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल) को अलग किया जा सकता है।
(०८)	हरेक अष्टकल संधि में मुख्य पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) को अलग किया जा सकता है।
(०९)	जिन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए हैं उन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षरों के बीच में एक से अधिक गुरुअक्षर का प्रयोग नहीं हुआ है।
(१०)	अष्टकल संधि लगालग़ागा और गालगालग़ा में ही मुख्य पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित है क्योंकि दोनों संधि अनुक्रम से अष्टकल संधि गागागा़गा और गागागागा़ के ही स्वरूप हैं।

अब मैं अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि की सूचि और अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि की सूचि प्रस्तुत करता हूं। दोनों सूचि में किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है तथा किसी भी संधि के आवर्तित स्वरूप में भी एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होगा।

अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)
०१	पंचकल	लगागा	*	*
०२	पंचकल	गालगा	*	*
०३	षट्कल	लगालगा या लगालगा	* *	* *
०४	षट्कल	लल़गागा	*	*
०५	षट्कल	गालल़गा	*	*
०६	सप्तकल	लगागागा	लगाललगा	*
०७	सप्तकल	गालगागा	*	गालगालल
०८	सप्तकल	गागालगा	ललगालगा	*
०९	सप्तकल	ललगालगा	*	*
१०	सप्तकल	लगाललगा	*	*
११	अष्टकल	गागागागा या गागागागा	लगालगागा, गाललगागा। ललगागागा, गागाललगा, ललगाललगा, गालगालगा।	गागागालल, गाललगालल, गागालगाल। *
१२	अष्टकल	लगालगागा	*	*
१३	अष्टकल	ललगागागा	ललगाललगा	*
१४	अष्टकल	गाललगागा	*	गाललगालल
१५	अष्टकल	गागाललगा	ललगाललगा	*
१६	अष्टकल	ललगाललगा	*	*
१७	अष्टकल	गालगालगा	*	*

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)
०१	पंचकल	गागा़ल	*	*
०२	षट्कल	गालगा़ल या गा़लगाल	* *	* *
०३	षट्कल	गागालल़	*	*
०४	सप्तकल	गालगा़लल	*	*
०५	सप्तकल	गा़गागाल	*	गा़ललगाल
०६	सप्तकल	गा़ललगाल	*	*
०७	अष्टकल	गागागा़लल	*	गाललगा़लल
०८	अष्टकल	गाललगा़लल	*	*
०९	अष्टकल	गागाल़गाल	*	*

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी वैकल्पिक संधि को अखंडित प्रकार के छंदों में अंतिम संधि के रूप में प्रयुक्त नहीं की जा सकती जबकि खंडित प्रकार के छंदों में छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर आए इस तरह से अंतिम संधि के रूप में भी प्रयुक्त की जा सकती है। अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी वैकल्पिक संधि को अखंडित और खंडित दोनों प्रकार के छंदों में छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर आए इस तरह से प्रयुक्त की जा सकती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का और उसकी वैकल्पिक संधि का प्रयोग छंद-रचना में इस तरह से करना होगा कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए। फिर भी सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में ही यानि कि गागागा़गा या गागागागा़ संधि के प्रयोगवाले छंदों में ही वैकल्पिक संधि का प्रयोग करना उचित होगा।

पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्यभार के अलावा गौण पद्यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती।

एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट (वैकल्पिक संधि का प्रयोग) सिर्फ़ गागागा़गा या गागागागा़ संधि के प्रयोगवाले छंदों में ही मुख्य और गौण पद्यभार को ध्यान में रख कर इस तरह से लेनी चाहिए कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए।

अब मैं ग़ज़ल के कुछ प्रचलित छंदों की सूचि प्रस्तुत करता हूं कि जिसमें अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि क्रमांक १ से १२ का ही प्रयोग हुआ है। हरेक छंद में मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।

ग़ज़ल के प्रचलित छंद

०१	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ तर्क-संगत नाम : ४लगागा़ प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०२	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगा तर्क-संगत नाम : ४लगागा़-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०३	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ तर्क-संगत नाम : ८लगागा़ प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०४	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०५	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ा तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा-लगा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०६	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ८ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित

०७	लगालग़ा लगालग़ा लगालग़ा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : ४लगालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०८	गालग़ा लगालग़ा गालग़ा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगालग़ा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
०९	गागा लल़गागा लल़गागा लल़गागा तर्क-संगत नाम : -लल+४लल़गागा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१०	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा तर्क-संगत नाम : ४लग़ागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
११	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागा तर्क-संगत नाम : ३लग़ागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१२	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१३	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ३गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१४	गालग़ागा गालग़ा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : २(२गालग़ागा-गा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
१५	गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित

१६	ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा तर्क-संगत नाम : ४ललगालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१७	लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा तर्क-संगत नाम : ४लगालग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१८	गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागागागाग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१९	गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२०	गागाग़ागा गागाग़ागा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
२१	गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२२	गागागाग़ा गागा गागागाग़ा गागा तर्क-संगत नाम : २(२गागागाग़ा-गागा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
२३	गागालग़ा लगाग़ा गागालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(गागालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित
२४	ललगालग़ा लगाग़ा ललगालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(ललगालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित

२५	गालल़गा लगालग़ा गालल़गा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : २(गालल़गा+लगालग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित
२६	गागा लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा तर्क-संगत नाम : -लल+२(लल़गागा+लग़ालगा) प्रकार : मिश्र-खंडित
२७	लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा लल़गा तर्क-संगत नाम : २(लग़ालगा+लल़गागा)-गा प्रकार : मिश्र-खंडित
२८	गाल़गागा लल़गागा लल़गागा लल़गा तर्क-संगत नाम : ल+४लल़गागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२९	गाल़गागा लल़गागा लल़गा तर्क-संगत नाम : ल+३लल़गागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
३०	गाल़गागा लग़ालगा लल़गा तर्क-संगत नाम : ल+लल़गागा+लग़ालगा+लल़गागा-गा प्रकार : मिश्र-खंडित

छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि लल़गागा प्रयुक्त होती है और उस अंतिम संधि लल़गागा के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से अंतिम संधि लल़गा प्राप्त होती है कि जिसमें दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का या एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट है।

छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में पहली संधि गाल़गागा प्रयुक्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। लल़गागा संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से ललल़गागा संधि प्राप्त होती है। ग़ज़ल के छंदों में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं होते। इस आधार पर ललल़गागा संधि के पहले और दूसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर गाल़गागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर

(गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। गाल़गागा संधि कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर स्थित है उसका प्रयोग षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा के साथ मिश्र रूप के जितना ही मर्यादित रहेगा। षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा का मुख्य पद्यभार भी संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर ही स्थित है।

लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर छंद क्रमांक २५ के अलावा सभी अखंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में पद्यभार समान मात्रा के अंतर पर स्थित है और सभी खंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में सिर्फ़ लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षरों की मात्रा के जितनी ही विषमता रहती है जो स्वीकार्य है। छंद क्रमांक २५ में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है और इसीलिए उसमें पद्यभार अनुक्रम से ७ और ५ मात्रा के अंतर पर स्थित है। जिस छंद में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा रहेगी उस छंद की प्रवाहिता और गेय-तत्व उतने ही कम होंगे और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी उतनी ही कम हो जाएगी।

***

'ग़ज़लधारा' की e-book (pdf file)

आप मेरी website : www.udayshahghazal.com से

download करके निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।